IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

मैतैलोन (मणिपुरी) भाषा का विकास- क्रम

अङोम बुङ सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
Email id- bungangom@gmail.com

बीज शब्द :मैतैलोन, मणिपुर, संपर्क भाषा, मातृभाषा, जनजाति

मणिपुर भारत के उत्तर जनजातियाँ एक साथ मणिपुर 34 पूर्वी सीमा में बसा एक छोटा सा राज्य है। मणिपुर में-के भिन्न-भिन्न पहाड़ों में बसती हैं। मणिपुर के मैदानी क्षेत्र में मैतै जाति के लोग रहते हैं। उनकी भाषा मैतैलोन है। यह भाषा पूरे मणिपुर राज्य के भिन्न-भिन्न जनजातियों की भाषाओं के बीच संपर्क भाषा का कार्य करती है। एक सामासिक शब्द है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है। 'मैतैलोन''मैतै लोन +' = यहाँ 'मैतै' जाति विशेष का नाम है और लोन का अर्थ है भाषाअ ,र्थात मैतै जाति की भाषा। यह भाषा मणिपुर राज्य के जनसंपर्क की भाषा होने के साथ-साथ 'राजभाषा' है। 1992 अगस्त 20में इस भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की भाषाओं में स्थान दिया। मैतैलोन का दूसरा नाम मणिपुरी भाषा है। मैतै लोगों का मानना है कि मैतैलोन बहुत पुरानी भाषा है। इनका मानना है कि जब से मैतै लोगों का इस धरती पर आगमन हुआ तब से उनके बीच यही भाषा व्यवहारित हो रही है। मणिपुर के इतिहास से ही साबित होता है कि अस्मृति काल से ये मैतैलोन मणिपुर में रहने वाले सभी लोगों की एकमात्र संपर्क भाषा रही है। मैतैलोन भाषा तिब्बती बर्मन भाषा परिवार की भाषा है।-

बर्मन भाषाई समूह में रखा गया है। उत्पत्ति की-में मैतैलोन या मणिपुरी को तिब्बती "द लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया" जार्ज ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक दृष्टि से देखा जाए तो यह भाषा तिब्बती बर्मन भाषायी कुल की अन्य भाषाओं से कई स्तर पर समानताएँ पायी गयी है। जैसे ध्वनी ,लिंग ,प्रत्यय ,तान ,शब्द रचना , पुरुष आदि में। प्रस्तावित शोध पत्र में मणिपुर की भाषा मैतैलोन का भाषाई विकासक्रम पर विचार करने का प्रयास किया जाएगा। ,काल ,वचन

भाषा एक ऐसी पद्धति है जिसमें वस्तुओं, संबंधों , क्रियाओं व भावनाओं आदि सबके लिए विशेष प्रतीक होते हैं | इनके माध्यम से हम विभिन्न प्रकार के संदेश एक दुसरे तक पहुंचा सकते हैं | हम अपनी भाषा का स्वयं सृजन करते हैं , अर्थात् हम शब्दों को विभिन्न रूप से जोड़कर ऐसे वाक्य बना सकते हैं जो पहले कभी बोला न गया हों | मानव, समुदाय में बोली जाने वाली सभी भाषाओं के नियम होते हैं जिन्हें हम सभी बड़े होते-होते सिख जाते हैं | भाषा अथवा बोली हमारे लिए पैत्रिक संपत्ति है जो एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक हस्तांतरण होती है|

हम भाषा का प्रयोग सम्प्रेषण के लिए करते हैं | भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों, आवश्यकताओं, भावनाओं व संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करते हैं | भाषा का प्रयोग करके हम अपने वर्त्तमान और बीते हुए अनुभवों के बारे में दूसरों को बताते हैं तथा उनके अनुभवों से भी परिचय होते हैं | भाषा अभिव्यक्ति का प्रतीक है|

मणिपुरी भाषा भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक छोटा सा राज्य मणिपुर की भाषा है | मणिपुर को भौगोलिक दृष्टी से पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है | मणिपुर का मैदानी क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों से चारों ओर घेरा हुआ है | मणिपुर का क्षेत्रफल वर्ग की. मी. 22,327 है | इसका 90 प्रतिसत पहाड़ी और 10 प्रतिशत भाग मैदानी है | पहाड़ी क्षेत्र का क्षेत्रफल वर्ग कि.मि 20,484 है और मैदानी का क्षेत्रफल वर्ग कि.मी 1,843 है |

प्राचीन काल में मणिपुर को अनेक नामों से जाना जाता था | यहाँ के लोगों द्वारा अपनी मातृ-भूमि को अनेक युगों में अलग-अलग नामों से संबोधित करने की बात कई प्राचीन ग्रंथों में पाई जाती है| 'शाकोक लमलेन' नमक प्राचीन ग्रन्थ से पता चलता है कि लोग इस देश को 'मयाय कोयरेन पोइरै नम्थक शारोनपुंग' नाम से जाने जाते थे | सनामही लाईकन नामक प्राचीन ग्रन्थ से पता चलता है कि १८ वी० सदी के आरम्भ मेइदिन्गु पामहेबा यानि गरीब निवाज के रामानंदी धर्म में दीक्षित होने के पश्चात इस देश का नाम मणिपुर रखा गया |

'मणिपुरी' शब्द संस्कृत का आगत शब्द है | मणिपुर में 'ईन' प्रत्यय करके 'मणिपुरी' शब्द बनता है | इसमें मुख्य रूप से तिन अर्थों का बोध होता है – (1) मणिपुर राज्य का निवासी, (2) मणिपुर राज्य की भाषा और (3)मणिपुर से सम्बंधित | मणिपुर से पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों के लोगों को संबोधित किया जाता है | मणिपुर एक छोटा-सा राज्य होने पर भी प्राचीन काल से यहाँ विभिन्न जातियाँ बस्ती आ रही हैं | इन जातियों की विभिन्न बोलियाँ हैं| पहाड़ी क्षेत्रों में विभिन्न जन-जातियों के लोग रहते है | इनकी अलग-अलग भाषाएँ हैं | मणिपुर के मैदानी क्षेत्र में मैतै जाती रहती है | यहाँ की प्रमुख और महत्वपूर्ण भाषा मैतैलोन है, जिसे मणिपुरी भाषा के नाम से जाने जाते है|

मणिपुर की भाषा और बोलियाँ तिब्बती-चीनी भाषा परिवार के अंतर्गत आती है | तिब्बती-चीनी भाषा परिवार को तिब्बतो –चाइनीज,किरात,शिनो तिब्बतान, इंदो मंगोलोइद या मंगोलियान चिनी आदि नामों से जाने जाते हैं | तिब्बतो बर्मन शाखा की मैतै और नागा उपशाखा की बोलियाँ मणिपुर में बोली जाती हैं |

यह मैदानी क्षेत्र की भाषा है | इसका मूल स्थान मैदानी क्षेत्र के केंद्र स्थल 'कंङ्ल्ला' और इसकी आस-पास है |पहली सदी के पहले से ही इसका अस्तित्व है| पद्मश्री मिनकेतन और प्रो०इबोहल सिंह के मतानुसार इस भाषा का मूल आधार चेंगले माना जाता है|

पुराने-ज़माने में मणिपुर के मैदानी क्षेत्र में मैतै भाषा के अलावा अन्य कइ बोलियाँ भी बोली जाती है |मणिपुर के मैदानी क्षेत्र में सात –सलाइ के लोग रहते

है| मणिपुरी भाषा का आरम्भ ईसा के पहले मानने से कोई अतिश्योक्ति न होगा, तब से मणिपुरी भाषा का उत्तरोत्तर विकास होता रहा तथा इसमें काफी परिवर्तन भी दिखाई पड़ने लगा | डॉ० इबोहल सिंह कांग्जम ने मनिपूरी भाषा के विकास क्रम को उपलब्ध साहित्यिक सामग्री के आधार पर मुख्य तीन कालों में विभाजित किया है |

भाषायी इतिहास के आधार पर मैतैलोन को तीन काल खण्डों में विभाजित किया है :-

1.आदिकाल (1ई०के प्रारंभ से 1263 ई० तक)

2.मध्यकाल (1263 ई ० से 1825 ई० तक)

3.आधुनिक काल (1825 ई० से अब तक)

आदिकाल (01 ई० से 1263 ई० तक) – यह काल मणिपुर के महाराजा **नोंग्दा लाइ रेन पखङ्बा** के काल से लेकर **मैदिङ्गु खुबिम्बा** के शासन काल तक मन गया है | नोंग्दा लाइ रेन पखङ्बा की संतानों को **निङ्थौजा** नाम से जाना जाता है | निङ्थौजा का अर्थ है राजा की संतान | 33 ई. से मणिपुर में " चेइथारोल कुम्बाबा' नामक ग्रन्थ जो मणिपुरी के राजा से सम्बंधित ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखना शुरू हो गया था। इस ग्रन्थ में राजा से सम्बंधित घटनाओं का वर्णन है | साथ ही सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण, भूकंप, महामारी, युद्ध, विजय पर्व आदि का वर्णन है | इस काल में मणिपुर में गद्य और पद्य दोनों की साहित्यिक रचनाएँ होती थी| तृतीय शताब्दी तक इस भाषा में गद्य का पूर्णतया विकास हो चूका था तथा पोईरइटोन खूनथोकपा' इसी शताब्दी में रचित बहुचर्चित गद्य साहित्य है | अन्य ग्रंथों में पान थोईबी खोंगकुल, तूतेंगलोन, चाइनालोन, नुमिट-काप्पा आदि है|

मैतैलोन तान प्रधान भाषा है | इस भाषा में दो प्रकार के तान हैं : लेवेन तान (समतान) और दूसरा फालिंग तान (अवरोही तान) हैं | तान के कारण अर्थ भेद होता है | तान स्वरोब में होता है व्यंजनों पर नहीं होता है | मैतै लोन में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है | प्रत्यय द्वारा निषेधात्मक अर्थ का प्रयोग होता है| वृत्तियों की अभिव्यक्ति प्रत्यय के द्वारा होती है |

मध्यकाल में बाहरी देशों के साथ संपर्क में होना शुरू हुआ है | इस काल खंड में मणिपुर में हिन्दू धर्म का आगमन शुरू हुआ है | साथ ही नयी नयी ध्वनियों का आगमन हुआ, जैसे ग, घ, ज , झ , द , ढ , भ , ब , र आदि नई ध्वनियाँ आई | मध्य काल में मणिपुरी साहित्य में दो विशेष शैलियाँ दृष्टिगत होती है | विशुद्ध मणिपुरी : इस शैली में परंपरागत संस्कृति तथा इतिहास सम्बन्धी रचनाएँ होती थी , इसमें देशज शब्दों का बाहुल्य था | प्राचीन काल की उपेक्षा इसमें भाषा की अधिक सरलता एवं नवीनता दिखाई देती हैं | वे ग्रन्थ है – चोथे थांग वाई पहन्पा , नुन्पान पोम्पी लूवाओपा आदि |

संस्कृत बंग्लानिष्ठ मणिपुरी : इस शैली में देशज शब्दों की उपेक्षा संस्कृत शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता था | नवीन आगत सघोष ध्वनिओं का प्रयोग इसमें होता था तथा कृष्णा-भक्ति एवं राम भक्ति सम्बन्धी रचनाओं का अनुवाद इसमें ही होता था तत्कालीन समाज में यह शैली अधिक प्रचलित थी | मौखिक रूप में उच्चारण में बांग्ला का प्रयाप्त प्रभाव पड़ता था |

आधुनिक काल मणिपुर के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण काल है| इस काल में मणिपुर का प्रशासन में अंग्रेजों का हस्तक्षेप शुरू हो गया | बाद में मणिपुर पर पूर्ण रूप से अंग्रेजों का शासन आया | इस राजनैतिक परिस्थितियों का मणिपुरी भाषा पर प्रभाव साफ-साफ देखने को मिलता है | कई नए नए शब्द मैतै लोन में आ गए | मैतै लोन के शब्द भंडार में संस्कृत, हिंदी , अंग्रेजी, बर्मीज़ आदि अनेक शब्द घुल मिल गए| मैतै लोन की अपनी लिपि है, उसे मैतै-मयेक कहते है | यह लिपि ब्राहमी लिपि से सम्बंधित है | इस लिपि में रचित कई प्राचीन मणिपुरी साहित्य ही नही बल्कि हस्तलिखित रचनाएँ अभी भी उपलब्ध है | जिससे यह ज्ञात होता है कि पुराने मैतै लोग कई ढंग से साहित्य रचना करने में इस लिपि का प्रयोग करता था|फिर, मणिपुर में हिन्दू धर्म के आगमन के साथ साथ हिन्दू धर्म गुरु शान्तिदास गोसाई के सलाह पर उस काल के महाराज गरिब्निवाज़ 1709-1748 जिन्हें पम्हेइबा के नाम से भी जाना जाता है उन्होंने मैतै मयेक को नस्त करने हेतु इकट्ठा करके जला दिया था | इस सन्दर्भ से शान्तिदास के निम्न सलाह द्रस्तव्य है – "लाईगी कांगलोन इबा मैतैगी मयेक पुम्नामक लाईरिक्का कोन्नाना मुथ्त्लगा श्रीराम प्रभुगी मंगोल ओइनब देव अखर असिबु चत्नाह्न्सी |

इसका अंग्रेजी में अनुवाद है -

" Let us destroy all the Meitei scripts/alphabet along with all religious books for the well being of shri raam prabhu and let us replace them by dev akhar."

उनके इस सलाह को स्वीकारते हुए, राजा के आदेशानुसार बंगाली लिपि को मैतै समाज में परिचय कराया था | फिर उसके बाद बंगाली लिपि के प्रयोग में व्यापकता आयी और यह सिलसिला ब्रिटिश के शासन काल के उपरांत भी बना रहा |

वर्त्तमान समय में मैतै लोग अपनी लिपि मैतै मयेक के प्रति अधिक जागरूकता हो गए है| जिसके चलते वे इसे नए पीढ़ी को भी यह सिखाना चाहते हैं और नए शिक्षा पद्धति में भी इसे समाहित किया है| वर्त्तमान पीढ़ी के विद्यार्थियों को इसी लिपि में मैतैलोन का पाठ पढ़ाया जाता है|साथ ही मणिपूरी साहित्य जगत में जितने भी रचनाएँ प्रकाशित हो रही है उसमें भी मैतै लिपि का होना अनिवार्य सा माना गया है| यह ही नहीं, मैतैमयेक के प्रति इस जागरूकता को हम समाचार-पत्रों में प्रत्यक्ष भी देख सकते हैं| राज्य सरकार ने सन् 2006 को संस्थाओं में मैतै मयेक को प्राथमिक स्तर से पढ़ाना शुरू किया है| किसी भी राज्य के लिए अपनी मातृभाषा को पढ़ना और जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है| कहा जाता है कि हम जब सपने भी देखते हैं वह मातृभाषा में ही देखते हैं| मणिपुर सरकार मणिपुरी भाषा के प्रसार-प्रचार के लिए अपने तरफ से सम्पूर्ण योगदान दे रहे हैं|

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मणिपुरी भाषा और साहित्य, सं. प्रो. हजारीमयूम सुवदनी देवी, हिंदी परिषद्, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, काँचीपुर, इंफाल-795003, प्रथम संस्करण, 2007
2. मणिपुर में हिंदी की विकास यात्रा, सुरेश चन्द्र, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013
3. भाषाविज्ञान हिंदी भाषा और लिपि, रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, 2007
4. भाषा विज्ञान, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, डॉ० भारतेंदु द्विवेदी
5. सामान्य भाषाविज्ञान, डॉ० बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 2004
6. हिंदी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, 1980
7. भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पटना, 1979